नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

अभ्युदय : मध्य प्रदेश के सुशासन मॉडल की नई रफ्तार

मध्य प्रदेश की विकास-यात्रा इन दिनों एक निर्णायक मोड़ से गुजर रही है. ग्वालियर की धरती से शुरू हुई 'अभ्युदय मध्य प्रदेश ग्रोथ समिट' केवल एक आर्थिक आयोजन भर नहीं, बल्कि सुशासन और परिणाम केंद्रित प्रशासनिक सोच का प्रतीक बनकर उभरी है. पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर आयोजित इस कार्यक्रम ने यह संदेश दिया है कि प्रदेश अब विकास को चुनावी वादे की तरह नहीं, बल्कि शासन की प्राथमिक प्रतिबद्धता के रूप में स्थापित कर रहा है.

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जिस गति, नीतिगत स्पष्टता और प्रशासनिक अनुशासन के साथ विकास मॉडल आगे बढ़ा रहे हैं, वह मध्य प्रदेश को एक कृषि-प्रधान राज्य से उभरते औद्योगिक पावरहाउस की ओर ले जाता दिखाई देता है. केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी ने इस समिट को राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया. इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि केंद्र और राज्य का डबल इंजन मॉडल अब नारे से आगे बढ़कर नीति, निवेश और क्रियान्वयन का संयुक्त ढांचा बन चुका है. 2 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव, औद्योगिक परियोजनाओं की शुरुआत और रोजगार सृजन के आश्वासन इस बात का संकेत हैं कि विकास का प्रवाह अब क्षेत्रीय संतुलन के साथ आगे बढ़ रहा है. विशेष रूप से ग्वालियर, चंबल अंचल, जिसे कभी पिछड़े क्षेत्र के रूप में देखा जाता था, आज लॉजिस्टिक्स, मैन्युफैक्चरिंग और नई औद्योगिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में नई पहचान गढ़ रहा है.

दरअसल,डॉ. मोहन यादव की शासन शैली में कुछ तत्व स्पष्ट रूप से उभरते हैं,तेज निर्णय प्रक्रिया, डिजिटल मॉनिटरिंग, पारदर्शी अनुमोदन प्रणाली और परिणाम आधारित मूल्यांकन. इसी के साथ फाइल मूवमेंट से लेकर परियोजना ट्रैकिंग तक ई-गवर्नेंस का उपयोग निवेशकों और नागरिकों, दोनों के लिए भरोसे का वातावरण तैयार कर रहा है. यह वही सुशासन की भावना है, जिसकी वकालत अटल जी ने की थी कि जहां सत्ता सेवा का माध्यम बने और नीतियां कागज पर नहीं, जमीन पर दिखें.

जाहिर है प्रदेश की अर्थव्यवस्था अब एकल क्षेत्र पर निर्भर नहीं है. खाद्य प्रसंस्करण, ऑटो-कंपोनेंट, रक्षा विनिर्माण, फार्मा सेक्टर, नवीकरणीय ऊर्जा और वेयरहाउसिंग,इन सभी क्षेत्रों में विस्तार यह दर्शाता है कि निवेश का लक्ष्य केवल आंकड़ों की बढ़ोतरी नहीं, बल्कि उत्पादन, मूल्य संवर्धन और स्थानीय रोजगार सृजन है. युवाओं के लिए कौशल विकास और उद्योग के लिए नीति स्थिरता,यह संयोजन मध्य प्रदेश को निवेश, अनुकूल राज्य के रूप में सुदृढ़ करता है. यह ध्यान रखना होगा कि सुशासन का दायरा केवल उद्योग और पूंजी तक सीमित नहीं रह सकता. शहरी सेवाओं, ग्रामीण सड़कों, सिंचाई, स्वास्थ्य अवसंरचना और शिकायत निवारण तंत्र को मजबूती देना इस मॉडल का महत्वपूर्ण सामाजिक आयाम है. यही वह बिंदु है, जहां विकास और न्याय दोनों समानांतर रूप से कार्य करते दिखाई देते हैं. यही संतुलन सुशासन को लोक कल्याण से जोड़ता है.

यह कहना जल्दबाज़ी होगी कि सारी चुनौतियां खत्म हो गई हैं. निवेश प्रस्तावों को वास्तविक रोजगार में बदलना, क्षेत्रीय असमानताओं को न्यूनतम करना और औद्योगिक विस्तार के साथ सामाजिक संवेदनशीलता बनाए रखना, ये ऐसे क्षेत्र हैं, जहां सतत निगरानी और राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता बनी रहेगी. परंतु यह भी उतना ही स्पष्ट है कि मध्य प्रदेश ने विकास को नीतिगत प्राथमिकता के रूप में अपनाया है. बहरहाल,उम्मीद की जानी चाहिए कि योजनाओं के ख्याल में भी इतनी ही कुशलता दिखाई जाएगी.

भारतीय संस्कृति के प्रतीक पंडित मदन मोहन मालवीय

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ एचपीयू, शिमला

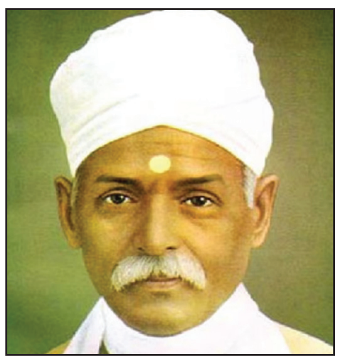

अपने हृदय की महानता के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में महामना के नाम से पूज्य मालवीयजी को संसार में सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था. करुणामय हृदय, भूतानुकम्पा, मनुष्यमात्र में अद्वेष, शरीर, मन और वाणी के संयम, धर्म और देश के लिये सर्वस्व त्याग, उत्साह और धैर्य, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में भी आत्मविश्वासपूर्वक दूसरों को असम्भव प्रतीत होने वाले कर्मों का संपादन, वेशभूषा और आचार विचार में मालवीयजी भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे. सिर जाय तो जाय प्रभु! मेरो धर्म न जाय मालवीयजी का जीवन व्रत था जिससे उनका वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन समान रूप से प्रभावित था.

बचपन में जिन आचार विचारों का निर्माण हुआ उससे रेल में, जेल में तथा जलयान में कहीं पर भी प्रातःसायं सन्ध्योपासना तथा श्रीमद्भागवत और महाभारत का स्वाध्याय उनके जीवन का अभिन्न अंग बना रहा. मालवीय जी का हिन्दु सभ्यता और संस्कृति के शाश्वत मूल्यों में अटूट विश्वास था और उनका यह विश्वास ही उनके जीवन तथा कार्यपद्धति का मुख्य आधार था. वे ईश्वर भीरु थे और धर्म के प्रति उनके मन में जन्मजात श्रृद्धा थी.

उन्होंने गंगा की अविरल धारा के लिए गंगा महासभा भी बनाई. उनके प्रयासों से 1916 में एक समझौता भी हुआ जिसे अविरल गंगा रक्षा समझौता कहा जाता है. महामना का %गोरक्षा आन्दोलन धार्मिक, आर्थिक और स्वास्थय, तीनों कारणों से प्रेरित था . इसी प्रेरणा के फलस्वरूप हरिद्वार के गो वर्णाश्रम धर्म सभा कनखल ने और फिर भारत धर्म महामण्डल और सनातन धर्म सभाओं ने गोरक्षा के लिए आन्दोलन छेड़ दिया . मालवीय जी इनमें से अधिकांश गोरक्षा सम्मेलनों के सभापति रहे. उन्होंने काशी सहित अनेक स्थानों पर गौशालाओ की स्थापना करवाया. अनेक तीर्थों के जीर्णोद्धार का श्रेय भी मालवीय जी को प्राप्त है हरिजन आंदोलन के तहत छुआछूत को समाप्त करने में भी मालवीय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. 1933 में गठित हरिजन सेवक संघ की पहली बैठक के अध्यक्ष मालवीय ही थे. प्राणों में बसा था धर्म मालवीय सनातन धर्म और हिंदू संस्कृति के बहुत बड़े पैरोकार थे. उन्होंने सामाजिक सुधार का लक्ष्य रखते हुए सनातन धर्म और हिंदू संस्कृति के लिए शक्तिशाली आंदोलन चलाया. उन्होंने इसमें जात-पात का भेदभाव नहीं किया और तीव्र विरोध के बावजूद कलकत्ता, काशी प्रयास और नासिक में दलितों को धर्मोपदेश और मंत्र दीक्षा प्रदान की. 1880 में छात्र जीवन में ही उन्होंने 'हिंदू समाज' नामक संगठन की स्थापना कर दी थी.

प्रयाग हिंदू सभा, भारत धर्म महामंडल और हिंदू महासभा के जरिये उन्होंने सनातन धर्म का का प्रचार किया. हिंदू महासभा को कट्टर हिंदूवादी संगठन माना जाता था, लेकिन मालवीय इसके सबसे उदार सदस्य थे. तभी तो वे एक ही समय में हिंदू महासभा में भी थे और कांग्रेस में भी. एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण वे अत्यधिक धार्मिक विश्वासी थे. मालवीय जी ने असँख्य धार्मिक लेख लिखे, वे अंततः समाज के लिए ही थे. कल्याण नामक हिन्दु धार्मिक पत्रिका उनके धार्मिक विचारों का सर्वाधिक प्रतिनिधित्व करती है. वे भारतीय समाज को धर्ममय और आस्थामय देखना चाहते थे. धर्माधारित जीवन पवित्र, सत्य और उज्जवल होता है. धर्म पर चलने का उनका मुख्य कारण यही था. मालवीय जी के धार्मिक विचारों और धार्मिक कार्यों में भी समाज का हितचिंतन निहित था. उन्होंने गौरक्षा संघ की स्थापना भी की थी. वे सनातन धर्म सभा, हिन्दु महासभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन इत्यादि अनेक संस्थाओं के बहुमुखी नेता, संचालक और प्राण थे.

मालवीय को 'मुंडकोपनिषद्' की सूक्ति 'सत्यमेव जयते' को प्रचलित करने का श्रेय जाता है. बाद में इस सूक्ति को देश का राष्ट्रीय सूक्त वाक्य स्वीकार कियागया और देश के सरकारी प्रतीक चिन्हों के नीचे लिखा गया. काशी में महामना ने प्राचीन भारतीय शिक्षा के गौरवशाली मंदिर 'तक्षशिला' और 'नालंदा' को पुनर्जीवित करते हुए राष्ट्र निर्माण में भारतीय दृष्टि के अनुरूप शिक्षा की परिकल्पना को जीवंत स्वरूप देते हुए वर्ष 1916 में काशी हिंदू विश्व विद्यालय की नींव रखी ज्ञान के इस पावन केंद्र की स्थापना महान भारतीय संस्कृति को शिक्षा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने के लिए रखी गई थी. विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे भारत की सनातन सहिष्णु संस्कृति, नैतिकता, धार्मिक मर्यादाओं, जीवन के मौलिक अनुशासन, कार्य के प्रति निष्ठा, दान-भिक्षा जैसे विराट भाव, विश्व भाईचारा, सभी को सुखी, सभी को निरामय रखने का उद्देश्य निहित है.

वीर बाल दिवस पर विशेष

साहस, धैर्य और बलिदान की अमर गाथा साहिबजादे जोरावर सिंह और फतेह सिंह

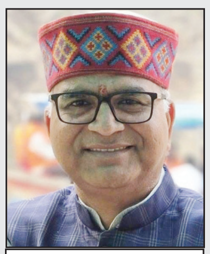

निखिलेश महेश्वरी

आज का बालक धीरे-धीरे अपना धैर्य खोता जा रहा है. इसका परिणाम यह है कि समाज में आत्महत्या, अपराध और संवेदनहीनता जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं. दूसरों के प्रति सम्मान, आत्मगौरव तथा अपने धर्म के प्रति आस्था भी कम होती दिखाई दे रही है. जबकि वास्तव में बालक के भीतर साहस, धैर्य, आत्मगौरव, संवेदनशीलता और व्यवहार-कुशलता जैसे गुण स्वाभाविक रूप से विकसित होने चाहिए. यही गुण उसे अपने परिवार, समाज, राष्ट्र और धर्म के लिए कुछ करने में सक्षम बनाते हैं.

यदि हमें बालकों में इन गुणों का विकास करना है, तो उन्हें ऐसे महापुरुषों और वीर बालकों के जीवन-चरित्र सुनाने होंगे, जिनसे वे प्रेरणा प्राप्त कर सकें. उन्हें ऐसे गीत सिखाने होंगे जिन्हें वे अपने जीवन में उतार सकें. ऐसी पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना होगा जो सीधे उनके हृदय को स्पर्श करें. साथ ही, ऐसी फिल्मों से उनका परिचय कराना होगा जिन्हें देखकर उनके भीतर आत्मगौरव और राष्ट्रीय भावना जागृत हो सके.

मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि प्रत्येक अभिभावक, शिक्षक और जिम्मेदार नागरिक अपने-अपने स्तर पर बच्चों में इन गुणों के विकास का प्रयास करेंगे तो ही ध्रुव, प्रह्लाद, हकीकत, भगतसिंह जैसे बालक तैयार होंगे. 26 दिसंबर को हमारे सामने ऐसा ही एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो आत्मगौरव और बलिदान की भावना को जाग्रत करता है—यह अवसर है वीर बाल दिवस. संभव है कि अनेक बालकों को इसके विषय में पर्याप्त जानकारी न हो, इसलिए आइए, इस पावन अवसर के संदर्भ में हम सब मिलकर चर्चा करें और आने वाली पीढ़ी को उसके गौरवशाली इतिहास से परिचित कराएँ. वर्ष 1699 में बैसाखी के पावन अवसर पर सिख धर्म के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की. उनके चारों पुत्र—साहिबजादे अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह—खालसा पंथ के अभिन्न अंग थे. खालसा पंथ की स्थापना का उद्देश्य मुगल शासन के अत्याचारों से समाज की रक्षा करना था, क्योंकि उस समय पंजाब पर मुगलों का प्रभुत्व था. खालसा पंथ के इस जनजागरण और संघर्ष को समाप्त करने के लिए मुगलों ने गुरु गोबिंद सिंह जी को पकड़ने हेतु अपनी पूरी शक्ति झोंक दी. इसी क्रम में 20 दिसंबर 1704 की कड़ाके की ठंड में मुगल सेना ने अचानक आनंदपुर साहिब के किले पर आक्रमण कर दिया. श्री गुरु गोबिंद सिंह जी मुगलों को करारा उत्तर देना चाहते थे, किंतु उनके साथियों ने स्थिति की गंभीरता को समझते हुए वहां से निकलना ही उचित समझा. गुरु जी ने भी जत्थे की सम्मति स्वीकार की और अपने पूरे परिवार के साथ आनंदपुर साहिब का किला छोड़कर प्रस्थान किया.

मार्ग में सरसा नदी का वेग अत्यंत तीव्र था. नदी के प्रचंड बहाव के कारण उसे पार करते समय गुरु गोबिंद सिंह जी का परिवार एक-दूसरे से बिछुड़ गया. यही वह क्षण था, जिसने आगे चलकर इतिहास को बलिदान की अमर गाथाओं से भर दिया. धर्म की रक्षा के लिए इससे बड़ा बलिदान और क्या हो सकता है. चमकौर में जब मुगलों के साथ भीषण युद्ध चल रहा था, तब गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने दोनों ज्येष्ठ पुत्रों-साहिबजादे बाबा अजीत सिंह जी और बाबा जुझार सिंह जी-को क्रमशः युद्धभूमि में भेजा. धर्म और सत्य की रक्षा के लिए उत्साह, शौर्य और अदम्य साहस से परिपूर्ण इन वीर साहिबजादों ने मुगलों से वीरतापूर्वक युद्ध किया और अंततः रणभूमि में अपना सर्वोच्च बलिदान अर्पित कर अमर हो गए. दूसरी ओर माता गुजरी देवी अपने दो छोटे पौत्रों-साहिबज़ादे जोरावर सिंह और फतेह सिंह—तथा उनके रसोइए गंगू के साथ एक गुप्त स्थान पर शरण लेने को विवश हुईं. किंतु दुर्भाग्यवश, लालच में आकर गंगू ने माता गुजरी जी और उनके पौत्रों की सूचना मुगल अधिकारियों तक पहुंचा दिया.

अपने वीर बालकों के बलिदान पर श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था चार मुए तो क्या हुआ, जीवित कई हजार वर्ष 2022 में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने सिख पंथ के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के पावन अवसर पर उनके दोनों छोटे पुत्रों—साहिबज़ादे बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी—के अद्वितीय बलिदान को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए हर वर्ष 26 दिसंबर को 'वीर बाल दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की. इस निर्णय के साथ उनके साहस, धर्मनिष्ठा और राष्ट्रभक्ति को चिरस्मरणीय बनाने हेतु इस दिवस को प्रतिवर्ष मनाने की परंपरा का शुभारंभ हुआ. इस अवसर पर देशभर के विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा गुरुद्वारों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनके माध्यम से बालकों और युवाओं को वीरता, त्याग और आत्मगौरव की प्रेरणा दी जाती है. यह दिवस हमें राष्ट्रीय एकता, धर्मनिष्ठा और त्याग का महान संदेश देता है.

क्या सचमुच नोटों से हटेंगे बापू !

कुछ ऐसे भी नेता होते हैं जो भविष्यवेत्ता होते हैं या उड़ती चिड़?या के पंख पहचानने का हुनर जानते हैं. सीपीएम सांसद जॉन ब्रिटास ने दावा किया कि केंद्र की मोदी सरकार करेंसी नोट से महात्मा गांधी की तस्वीर हटाने की तैयारी कर रही है. इस संबंध में एक उच्चस्तरीय बैठक 1162 100 हो चुकी है, जिसमें चर्चा का प्रारंभिक दौर हुआ है. ऐसा लगता है कि मनरेगा योजना से गांधी का नाम हटाकर उसे 'विकसित भारत जी-राम-जी' का नया नाम दिए जाने से सांसद जान ब्रिटास को शक हो गया कि अब नोटों पर से भी बापू का मुस्कुराता चेहरा गायब कर दिया जाएगा. अब या तो इस बयान का सरकार स्पष्ट खंडन करे कि वह ऐसा कुछ भी नहीं करेगी या फिर चुपचाप बैठकर सस्पेंस बढ़ने दे. सवाल यह भी उठता है कि क्या फिर से नोटबंदी होगी और गांधी के चित्र वाले नोट वापस लिए जाएंगे? अगर नए नोट जारी होंगे तो उन पर किसकी तस्वीर होगी? नोट की एक साइड में राम मंदिर का चित्र छापा जा सकता है. दूसरी साइड में विश्व के सबसे बड़े स्वैच्छिक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन आरएसएस के सरसंघचालकों डॉ. हेडगेवारया गुरु गोलवलकर का चित्र छापा जा सकता है. संघ की शताब्दी से इसका संयोग बन सकता है. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर या बंकिमचंद्र चटर्जी की तस्वीर छापने से बंगाल के भद्रलोक खुश होंगे. यदि तिरूवल्लुवर या रामास्वामी पेरियार की तस्वीर छापी तो तमिलनाडु की जनता प्रसन्न होगी. चुनाव पर नजर रखकर ऐसा किया जा सकता है. नोटों पर डॉ. आंबेडकर का चित्र छापकर संविधान के प्रति गहरी आस्था जताई जा सकती है. कोई सवाल कर सकता है कि इतनी सारी विभूतियों के फोटो कैसे छप सकते हैं तो जवाब है कि अमेरिका में डॉलर के विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों पर (जिसे वहां बिल कहा जाता है) पूर्व राष्ट्रपतियों जॉर्ज वॉशिंगटन, लिंकन, जेफरसन व रूजवेल्ट की तस्वीर छपी रहती है. यहां भी 10, 20, 50 और 500 के नोट पर सरकार चाहे जिसकी तस्वीर छापने का निर्णय ले सकती है. वह दलील दे सकती है कि शराब की दुकानों व अनैतिक ठिकानों पर बापू का नोट जाने से उनकी आत्मा को पीड़ा होती होगी इसलिए उनका फोटो हटाया जा रहा है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

भरपूर मिला चुनावी चंदा खुश है बीजेपी का हर बंदा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, राजनीतिक पार्टियों को मिलने वाले चंदे से पता चलता है कि उनकी कितनी लोकप्रियता है. सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्टोरल बांड योजना को रद्द कर दिया लेकिन इससे बीजेपी को कोई फर्क नहीं पड़ा. उसकी तिजोरी लबालब है. 2024-25 में बीजेपी को 6,088 करोड़ रुपये का चंदा मिला. खास बात यह है कि बीजेपी को कांग्रेस की तुलना में 12 गुना चंदा हासिल हुआ.'

हमने कहा, 'चुनाव लड़ने वाला हर बंदा चंदा चाहता है. जिस पार्टी का प्रभाव मंदा हो गया उसे बहुत कम चंदा मिल पाता है. इस मामले में कम्युनिस्टों का बेहाल है. बीजेपी के शीर्ष 30 दानदाताओं में देश की कई कंपनियां शामिल हैं. चंदा देने वाले अपने लिए फेवरेबल नीतियां चाहते हैं. यह गिव एंड टेक का खेल है. इस हाथ दे, उस हाथ ले ! बीजेपी को हाथ फैलाकर चंदा मांगना नहीं पड़ता. वह खुद ही उसकी झोली में आ टपकता है. कहते हैं- मांगे बिन मोती मिले, मांगे मिले न भीख !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, चंदा कहां नहीं है! चंदा शब्द पर कितने ही फिल्मी गीतों की रचना हुई है.

सुनील दत्त- मधुबाला की फिल्म 'इंसान जाग उठा' का गीत था- ये चंदा रूस का, ना ये जापान का, ना ये अमरीकन प्यारे, ये तो है चंदा हिंदुस्तान का ! एक अन्य गीत है- चंदा ओ चंदा किसने चुराई तेरी मेरी निंदिया, मैं जागूं तो सो जाए! एक गीत के बोल हैं- चंदा को ढूंढने सभी तारे निकल पड़े ! आपने वह गीत भी सुना होगा- दम भर जो उधर मुंह फेरे ओ चंदा आ, मैं उनसे प्यार कर लूंगी, बातें हजार कर लूंगी ! चंदा है तू मेरा सूरज है तू, ओ मेरी आंखों का तारा है तू!'

हमने कहा, 'आसमान के चंदा को हर कोई देखता है लेकिन राजनीतिक पार्टियों को चुनावी चंदा अत्यधिक प्रिय है. जैसे पूर्णिमा से अमावस के बीच आसमान में चंदा घटता है, वैसे ही कुछ दलों का चंदा कम होता चला जाता है. जिस पार्टी का सितारा बुलंदी पर रहता है, उसका चंदा दिन दूना, रात चौगुना बढ़ता है. अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग ने 1969 में चंदा पर पहला कदम रखा था. छत्तीसगढ़ के संत कवि पवन दीवान कवि सम्मेलनों में गीत गाते थे- एक थी लड़की मेरे गांव में चंदा जिसका नाम था! फिलहाल बीजेपी को भारी जबरदस्त पार्टी मानकर खुलेआम मोटी रकम का चंदा दिया जा रहा है, जिसकी चमक चुनावों में दिखाई दे रही है. लुभावने वादे की बुनियाद में अरबों रुपये का चंदा रहता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12122 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	4	■	5	
6		■	7				■
	■	8			■	9	10
■	11			■	12		
13			■	14			■
	■	15	16		■	■	17
18	19	■	20		21	22	
23			■	24			

बाएं से दाएं

1. भाग्यवाद (सं.) 5. आठ की संख्या, आठ (सं) 6. संध्या, सूर्यास्त का समय (उर्दू) 7. कुछ जानने के लिए बार-बार ताकने या झांकने की क्रिया, छिपकर देखने की क्रिया 8. चुनने का कार्य संचय (सं.) 9. तह, परत 11. पुष्प, सुहृदय (सं.) 12. उत्तम नीति, भक्त ध्रुव की माता का नाम (सं.) 13. आयुर्वेद के एक प्राचीन आचार्य या उनके द्वारा प्रणीत ग्रंथ, दूत (सं.) 14. यात्रियों के ठहरने का स्थान (उर्दू) 15. एक प्रसिद्ध देवर्षि 18. न्यूनता (उर्दू) 20. श्रीकृष्ण, मन को मोहने वाला 23. परमात्मा, विष्णु 24. विदीर्ण करना, फाड़ना

ऊपर से नीचे

1. किसी की याद कराने वाला चिन्ह, यादगार वस्तु 2. मृत्यु के देवता, कौआ (सं.) 3. झरोखा, खिड़की (सं.) 4. दक्खिन, दक्षिण भारत 5. वह बात जो कही न जा सके, अवर्णनीय 8. जगमगाना, प्रकाशित होना, कीर्ति लाभकरना 10. कामदेव की पत्नी 11. देवता, सूर्य, स्वर, ध्वनि 12. मद्य, मदिरा (सं.) 13. पक्षियों का मधुर शब्द करना, उमंग में या प्रसन्न होकर अधिक बोलना 14. घर, मकान, सभा या अधिवेशन का स्थान (हाउस) (सं.) 16. सुंदर, प्रिय, रमने वाला विलास, क्रीड़ा (सं.) 17. करघे पर तागों से कपड़ा तैयार करना 19. एक कृष्ण भक्त स्त्री जिसे विषपान करना पड़ा था 21. जूते आदि बनाने वाला कारीगर 22. प्रत्येक, एक-एक, नाश करने वाला

Solution 12121

न	व	ग	ठि	त	■	पू	त
रे	■	र	■	स्वी	का	र	■
श	र	म	■	र	म	क	ना
■	ज	म	ना	■	चो	■	टा
ब	■	सा	ल	गि	र	ह	■
ग	म	ला	■	ल	■	की	ल
दा	ह	■	चा	ट	■	क	ल
द	ल	द	ल	■	घा	त	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में मित्रों का सहयोग मिलेगा. वाहन सुख प्राप्त होगा. शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. वर्ष के मध्य में स्थान परिवर्तन का योग है. व्यवसाय में वृद्धि होगी. वर्ष के अन्त में पूर्व निर्धारित कार्यों में रूकावटें आयेंगी. व्यर्थ वाद विवाद एवं मानसिक अशांति रहेगी. योजनायें रूक सकती हैं.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग मिलेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय मे वृद्धि होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को रूकावटों के कारण योजनायें अपूर्ण रह सकती हैं. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यों में रूकावटें आयेंगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा करना पड़ेगी. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को मान-सम्मान प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल, दयालु, सहनशील, न्यायप्रिय, एवं कुछ क्रोधी स्वाभाव का होगा, नौकरी में उच्च पद प्राप्त करेगा, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा, धार्मिक विचारों का होगा, ईश्वर के प्रति आस्था रहेगी, जन्म स्थान से दूर रहकर उन्नति करेगा.

मेष- विपरीत हालात में समझौता करने में भलाई है, पुराने कर्ज की परेशानी रहेगी, पारिवारिक जीवन में संतोष रहेगा, व्यवसायिक शिथिलता रहेगी.

वृषभ- नए संपर्क बनेंगे, विवाद से बचना चाहिये, लेदेकर काम बना लेंगे, महत्वपूर्ण कार्यो में अवरोध होगा, गुप्त शत्रुओं से सावधानी रखें.

मिथुन- किसी की मुलाकात मधुर रिश्तों में बदल सकती है, धार्मिक संतान संबंधी शुभ समाचार प्राप्त होगा, भूमि भवन मकान आदि के कार्यो में रूचि रहेगी.

कर्क- सुख सुविधा के सामान पर खर्च होगा, आजीविका की समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, कोर्ट कचहरी के कार्य सफल होंगे.

सिंह- धर्म कर्म में आस्था बढेगी, जीवनसाथी की भावनाओं का ध्यान रखें, अधिनस्थों एवं रक्त संबंधियों का सहयोग मिलेगा, कार्य सिद्धि सरलता से प्राप्त होगी.

कन्या- विवाद से बचें, रूखे व्यवहार से मित्र नाराज हो सकते हैं, नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होने का योग है, आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा.

तुला- भय की स्थिति में फैसला नहीं ले पायेंगे, व्यर्थ की बातों में समय व्यतीत होगा, श्रम साध्य कार्य बनेंगे, व्यापार व्यवसाय लाभप्रद रहेगा.

वृश्चिक- अटका धन वसूल होगा,संतान के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, यात्रा का कार्यक्रम बनेगा, आय से अधिक धन व्यय होगा, दैनिक कार्यों में परेशानी होगी.

धनु- जीवनसाथी के सहयोग से मुश्किलें टलेंगी, किसी को सहयोग देना पड़ेगा, प्रिय मुलाकात होगी, संतान आदि की समस्या का सरलता से समाधान होगा.

मकर- राजकीय मामले पक्ष में हल होंगे, कानूनी मामले वक्त पर सुलझेंगे, अचानक धन लाभ प्राप्त होगा, किये गये प्रयास सफल होंगे.

कुम्भ- धार्मिक कार्य पूजा पाठ लेखनादि के कार्यो में संतोष रहेगा, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, प्रियजनों से भेंटवार्ता होगी.

मीन- व्यापारिक साझेदारी से लाभ होगा, अनुभवी लोगों की सलाह उपयोगी रहेगी, शारीरिक शिथिलता रहेगी, वाद विवाद से बचने का प्रयास करें.

उदयकालीन ग्रह चाल

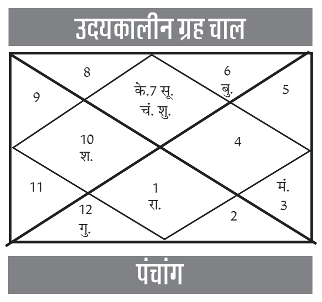

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2082 पौष शुक्ल षष्ठी भृगुवासरे दिन 10/0, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रातअंत 5/44, सिद्धि योगे दिन 11/49, तैतिल करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार कुम्भ रात 11/51 से मीन, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल षष्ठी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से चांदी, सोना, प्लेटिनम, के भाव में तेजी होगी, गुड़ खांड़, चीनी के भाव में उतार चढाव की चाल रहेगी, व्यापारी बाजार का रूख देखकर कार्य करें. भाग्यांक 2212 है.

SUDOKU 7254

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकु 7253

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1